भारत में पर्यटन उद्योग का विकास एवं आर्थिक क्षेत्र में योगदान

कु0 माधवी
शोध छात्रा, अर्थशास्त्र विभाग
दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय, मुरादाबाद

सार

भारत में पर्यटन उद्योग के विकास में बाधाओं के कारण ही पड़ोसी देशों की अपेक्षा २००६ में इसकी विकास दर ५.३ प्रतिशत ही रही है। जो कि अन्य देशों से काफी कम है। अतः पर्यटन के पूर्ण विकास के लिए पर्यटन यातायात व्यवस्था में सुधार करनी चाहिए तथा पर्यटकों को प्रोत्साहित करने के लिए आधुनिक सुविधाओं को भरपूर मात्रा में उपलब्ध कराना चाहिए। पर्यटकों की पूर्ण संतुष्टि के लिए ट्रैवेल एजेन्ट एवं गाइडों द्वारा पर्यटकों को ठगने की प्रवृत्ति को समाप्त करना चाहिए एवं इनके स्थान पर प्रशिक्षित एवं सुगम्य गाइडों की नियुक्ति करनी चाहिए। भारत सरकार को ट्रैवेल एजेन्टों व गाइडों को प्रशिक्षित करने के लिए देश के महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में पर्यटन प्रबन्ध में डिप्लोमा कोर्स की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि विश्राम गृहों एवं सूचना केन्द्रों पर प्रशिक्षित गाइडों की नियुक्ति की जा सके। अतः भारत में उपलब्ध यातायात के साधनों में तीव्रता एवं वायु व रेल सुविधाओं में समन्वय स्थापित होना चाहिए एवं हवाई यात्रा की अनिश्चितता व प्रतिवर्ष की यात्रा वृद्धि दर में परिवर्तन लाने की प्रवृत्ति को रोकना चाहिए। इस प्रकार भारत में स्थित प्रमुख पर्यटन स्थलों को वायुमार्ग से जोड़ा भी जाना चाहिए तथा नये प्रवेश द्वार भी खोले जाने चाहिए ताकि पर्यटन आसानी व सुविधाजनक महसूस हो सके। अतः इस प्रकार देश में उपलब्ध विभिन्न समस्याओं के समाधान के पश्चात ही भारत पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में विस्तार किया जा सकता है। वर्तमान समय में भारत सरकार ने पर्यटन के क्षेत्र में पूर्ण प्रगति करने के उद्देश्य से अनेक कदम उठायें है और पर्यटन के क्षेत्र में उपलब्ध होने वाले प्रत्येक समस्याओं को दूर करने का प्रयास भी किया है। यातायात व्यवस्था में सुधार की दृष्टि से हवाई अड्डों के विस्तार और आधुनिकीकरण, विमान सेवाओं में वृद्धि, सड़क और रेल परिवहन में विस्तार के सम्बन्ध में अनेक नीतिगत निर्णय लिये गये हैं।

कुंजीशब्द*पर्यटन उद्योग ,विकास आर्थिक, क्षेत्र भारत*

peer reviewed

प्रस्तावना

पर्यटन मुख्यतः अर्थशास्त्र से सम्बन्धित हैं जो एक उद्योग का द्योतक है तथा यह एक आर्थिक क्रिया भी है जो अन्य आर्थिक क्रियाओं को तरह इससे माँग की उत्पत्ति होती है तथा अन्य उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करता हैं। पर्यटन एक मूल एवं बहुत ही ऐच्छिक क्रिया है जो समस्त जनता एवं सरकारों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन करने योग्य है। यह एक उद्योग है जो लोगों को उनके आगमन पर नियत स्थान की तरफ आकर्षित करने, वहाँ तक पहुँचाने, आवासित करने, आहार प्रदान करने, मनो–विनोद करने तथा उनकी वापसी पर उन्हें घरों तक पहुँचाने से सम्बन्धित है।

पर्यटन को दो मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया गया है स्थिर क्षेत्र एवं अस्थिर क्षेत्र। स्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत वे समस्त आर्थिक क्रियाएं हैं जो कि समुदाय के निर्माण, मांग को आकर्षित करने एवं परिवहन प्रचालकों, यात्रा अभिकर्ताओं, परिवहन संस्थाओं व अन्य सहायक सेवा की क्रियाएं भी सम्मिलित है। अस्थिर क्षेत्र के अन्तर्गत अल्प–कालीन प्रवास, आवास सुविधा, खान–पान की माँग आदि क्रियाएं शामिल की जाती है। एक सीमित अर्थ में पर्यटन को एक उद्योग नहीं कहा जा सकता है परन्तु आर्थिक दृष्टि से पर्यटन से

ही मांग की उत्पत्ति होती है तथा यह विभिन्न उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करता है अतएव से समस्त क्रियाएं जो पर्यटन उद्योग के अन्तर्गत आती है द्य विलासितापूर्ण क्रियाओं के अतिरिक्त पर्यटन के असख्य रूप–सांस्कृतिक पर्यटन, स्वास्थ्य लाभ पर्यटन, क्रीड़ा पर्यटन, सम्मेलनध्महा सम्मेलन पर्यटन, धार्मिक पर्यटन आदि है। इसी प्रकार सामूहिक पर्यटन को भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि व्यक्तिगत एवं सामूहिक पर्यटक को उचित किस्म की वस्तुएं एवं सेवाएँ उपलब्ध हो सके।

पर्यटन की कुछ विशेषताएँ जैसे– अपना पारस्परिक अस्तित्व, अर्थव्यवस्था की स्वाधीनता, राष्ट्र के हर क्षेत्र का प्रभावित होना, तीव्र गति से विकास के लिए पूँजी के उत्पादन की कम दरें आदि के फलस्वरूप यह राष्ट्रीय विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है।

किसी भी क्षेत्र में धन और व्यापार बढ़ाने के मूलतः तीन तरीके है– कृषि विकास, औद्योगिक विकास और पर्यटन विकास। इन तीनों में सम्भवतः पर्यटन विकास एक शीघ्रगामी तथा कम से कम कठिन तरीका है। हालांकि पर्यटन स्वयं में संगठित उद्योग है परन्तु इसकी सीमाएँ बहुत विशाल है। विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई है तथा इसके लाभ राष्ट्र की समस्त जनता को उपलब्ध होते हैं।

भारत के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसका देश की अर्थ–व्यवस्था के विभिन्न अंगों से गहरा सम्बन्ध है। इससे जहां एक ओर राजस्व की प्राप्ति होती है, वहीं दूसरी ओर इससे देश के बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। विदेशी मुद्रा के दृष्टिकोण से इस उद्योग का और भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में पर्यटन न केवल बिना किसी वस्तु के निर्यात के करोड़ों रूपये की विदेशी मुद्रा का संचय करा देता है, बल्कि हमारी संस्कृति के प्रचार को भी, विदेशों में बिना किसी अतिरिक्त श्रम के पहुंचा देता है।

peer reviewed

पर्यटन राष्ट्रीय आय को बढ़ावा देता है। पर्यटन द्वारा विदेशी व सार्वजनिक कोष का बोझ हल्का हो जात है। अधिकांश राष्ट्रों में पर्यटन एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में स्थापित है जिसमें लोग बड़ी संख्या में आवास, खान–पान, परिवहन मनोरंजन, सेवा उद्योग व स्मारिका व्यापार में तल्लीन है। पर्यटन एक श्रमिक कृत उद्योग है और अन्य साधारण उत्पादक उद्योग की तुलना में कई गुना अधिक रोजगार प्रदान करता है, अर्थात यह बेरोजगारी समाप्त करने का बहुत ही बड़ा पहलू है। जिन क्षेत्रों में श्रमिकों का बाहुल्य है वहाँ बेरोजगारी है, उनके लिए पर्यटन एक समाधान है क्योंकि पूँजी नियोजन की दृष्टि से श्रमिक शक्ति के प्रयोग का प्रतिशत अधिक है। पर्यटन एक रोजगारित उद्योग है, पर्यटकों की सेवाओं की पूर्ति रोजगार के अवसर बढ़ाते है। पर्यटन उद्योग के बाहर भी रोजगार के अवसर प्रदान करने का श्रेय पर्यटन को ही है। पर्यटन द्वारा सृजन किये गये रोजगारों की सीमा कार्यो से लेकर प्रबन्ध कार्यो तक फैली हुई है। यह उद्योग अन्य उद्योगों की अपेक्षा लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। पर्यटन के फलस्वरूप होटल उद्यमियों, पर्यटन स्थलों के कार्मिकों, परिवहन व हस्तकारित उद्योगों के मार्गदर्शक आदि के रूप में प्रत्यक्ष कार्यो का उदगम होता है। पर्यटन ही एक ऐसा निर्यात व्यापार है जो राष्ट्रीय स्रोतों का हास किये बिना एक बहुत बड़ी विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। अतः पर्यटन एक निर्यात व्यापार के रूप में अन्य उद्योगों की अपेक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा स्वयं अद्वितीय स्थान स्थापित किये हुये है।

भारत में पर्यटन की स्थिति

भारत में स्वतंत्रता के बाद कुछ वर्षों तक पर्यटन क्षेत्र को धन निर्धारण के मामले में उच्च प्राथमिकता न दिये जाने के फलस्वरूप भारत में पर्यटन आयोजन का काम देर से प्रारम्भ किया गया। सरकार के पास जो भी आर्थिक संसाधन उपलब्ध थे वे अर्थ–व्यवस्था के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए रखे गये। गरीबी तथा बेरोजगारी जैसी समस्याओं को धन निर्धारण की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण समझा गया और योजना प्रक्रिया के प्रारम्भिक वर्षों में पर्यटन पर खास ध्यान नहीं दिया गया। एक तो देश में पहले से ही पर्यटन सम्बन्धी सुविधाओं की कमी थी, फिर शुरू के वर्षों में सरकार ने भी पर्यटन विकास की दिशा में बहुत कम प्रयास किये। निजी क्षेत्र की भागीदारी भी नहीं के बराबर थी और उसकी ओर से जो कुछ हुआ भी वह भी कुछ बड़े शहरों तक ही सीमित रहा।

भारत में पर्यटन की ओर सबसे पहला कदम सन् १९४५ में उठाया गया और सन् १९४६ में पर्यटन संगठन की स्थापना पर बल दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारम्भिक वर्षों में पर्यटन की अच्छी स्थिति नहीं थी, यही कारण था कि वर्ष १९५१ में केवल १७,००० पर्यटक ही भारत आये थे किन्तु वर्ष १९६६ में भारतीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना के पश्चात पर्यटन उद्योग को विशेष बढ़ावा मिला है एवं भारत में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन अन्य उद्योगों की अपेक्षा एक अदभुत उन्नति किया है। वर्ष १९९१ के मध्य से भारत सरकार ने आर्थिक सुधार के लिए उदारीकरण की नीति अपनाई है जिसका प्रभाव पर्यटन उद्योग के विकास पर भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ा है एवं भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि भी हुयी है। वर्ष १९९५ में भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या १७,०७,१५८ रही तथा जो वर्ष २००५ में बढ़कर २६,४९,३७८ हो गयी। अर्थात् भारत में आने वाले पर्यटकों की संख्या में १.५ गुना वृद्धि हुई है। गत तीन दशकों से भारत में पर्यटन से भारी वृद्धि हुई है।

अतः जहाँ सार्स जैसी बिमारियों और इराक युद्ध के चलते तथा आतंकवाद की बढ़ती घटनाओं के कारण दुनियाँ के कई देशों में पर्यटकों की संख्या तेजी से घटी वहीं भारत में पर्यटन उद्योग को वर्ष २००७ में अच्छी वृद्धि दर से राहत मिली है, लेकिन विश्व पर्यटकों में से ०.४ प्रतिशत पर्यटक ही भारत आते है। भारत में वर्ष १९९९ में कुल होटलों की संख्या ९१२ तथा कुल कमरों की संख्या ५५,४५५ थी जो सन् २००६ में बढ़कर होटलों की संख्या १३३३ तथा कुल कमरों की संख्या ७४,४६३ हो गयी अर्थात् होटलों की संख्या तथा कमरों की संख्या में १.४ गुना वृद्धि हुई है।

भारत में पर्यटन को उद्योग का दर्जा सातवीं पंचवर्षीय योजना में दिया गया एवं नौवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन के क्षेत्र के उदगम एवं विकास की सबसे वृहद रूप–रेखा सम्मिलित की गयी और इसके लिए ७९ करोड़ रूपये खर्च किये गये। भारत में वर्तमान दसवीं पंचवर्षीय योजना में पर्यटन को देश के संतुलित आर्थिक विकास का स्रोत माना गया है तथा इस योजना में पर्यटन के लिए बजटीय प्रावधान ५ गुना बढ़ाकर २९०० करोड़ कर दिया गया है। भारत के आर्थिक विकास में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत में पर्यटन व्यवसाय में लाखों लोग कार्यरत है। वर्ष २००४ में भारत में पर्यटन से ३.४३ करोड़ तथा २००८ में ४.८ करोड़ रोजगार के अवसर प्राप्त हुये है। वर्ष १९९६ में भारत को पर्यटन से ४३१८ करोड़ रूपये तथा २००६ में १४,३३३ करोड़ विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई अर्थात् दस वर्षों में ७० प्रतिशत विदेशी मुद्रा की आय में बढ़ोत्तरी हुई है। सन् २००७ तक भारत को १७०४९.४१ करोड़ रूपये विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। परन्तु विश्व पर्यटन आय में भारत का हिस्सा ०.७ प्रतिशत ही है। भारतीय पर्यटन के सम्बन्ध में उत्साहजनक तथ्य यह रहा कि यदि पर्यटक भारत आता है तो वह दीर्घ अवधि तक रहना पसन्द करता है। हाल के ही वर्षों में भारत में अनुमानित ठहरने की औसत अवधि ३० से ४० दिन थी।

peer reviewed

अध्ययन का उद्देश्य

1. भारत में पर्यटन की स्थिति का अध्ययन
2. भारत में पर्यटन उद्योग का आर्थिक क्षेत्र में योगदान का अध्ययन

भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों की विकास प्रक्रिया

भारत एक विशाल देश है और विश्व के सुन्दरतम देशों की श्रेणी में आता है। यह प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण है, जहाँ इसके उत्तर में पचास हजार वर्ग किलोमीटर में फैली और २५०० किलोमीटर लम्बी हिमालय की पर्वत शृंखलायें है जिनका ऊपरी भाग सदैव बर्फ से ठका रहता है। हिमालय न केवल विश्व की सबसे ऊंची चोटी श्माउन्ट एवरेस्ट है बल्कि ७५०० मीटर से ऊंची दस अन्य चोटियों भी मौजूद है। वहीं तीन ओर से सुरक्षा प्रदान करता ७५१६.५ किलोमीटर लम्बा समुद्र तट है। भारतीय समुद्र तट पर अनेक स्थानों पर मीलों लम्बी, सुरम्य, मनोहारी और शान्त सैरगाहें हैं जहां ऐसा प्रतीत होता है मानों समय आकर ठहर गया हो।

यह देश प्राचीनता एवं आधुनिकता का संगम है। अपने प्राचीन रीति रिवाजों और विचारों को त्यागे बिना भारतीयों ने आधुनिकता को अपना लिया है। यहाँ हर प्रकार के पर्यटकों हेतु देखने योग्य स्थल है।

यहाँ की विविधता को देखते हुए हर स्थल पर्यटन स्थल है, परन्तु अध्ययन के उद्देश्य हेतु कुछ प्रमुख पर्यटन स्थलों का वर्णन किया गया है जो पर्यटकों को अधिक आकर्षित करते हैं।

peer reviewed

जम्मू और कश्मीर

जम्मू और कश्मीर मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्र है जो २,२२,२३६ वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। जगह–जगह पर घाटियां और पर्वतीय झीलें स्थित है। यहाँ की राजधानी ग्रीष्मकाल में श्रीनगर और शीतकाल में जम्मू है। इसकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर इसे तीन भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग को लद्दाख, कारगिल, गिलगिट और स्कार्दू के नाम से जाना जाता है। मध्यवर्ती भाग को कश्मीर तथा दक्षिणी भाग को जम्मू कहा जाता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार कश्यप मुनि के नाम पर कश्मीर नाम प्रचलित हुआ। कश्मीर में ही पाषाणयुगीन स्थल (बुर्जहोम) मिला है। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर नजर डालने पर पता चलता है कि ईसा पूर्व शताब्दि में सम्राट अशोक ने कश्मीर में बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ श्रीनगर राज्य की स्थापना की। महान सम्राट अशोक का राज्य अफगानिस्तान तक फैला था। बाद में कुषाण वंश के सम्राट कनिष्क के शासन काल में बौद्ध धर्म की जड़ें और गहरी हुई। इससे कश्मीर को अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। छठवीं शताब्दी के आरंभ में कश्मीर पर हूणों का अधिकार हो गया। हिन्दू राजाओं में ललितादित्य (सन् ६९७ से ७३०) सबसे प्रसिद्ध राजा हुए। इन्होंने अपना साम्राज्य पूर्व में बंगाल तक, दक्षिण में कोंकण तक, उत्तर–पश्चिम में तुर्किस्तान तक और पूर्व में तिब्बत तक फैलाया था। इनके शासन काल की अवधि में ज्ञान, विज्ञान और धर्म की अभिवृद्धि कश्मीर में हुई। इन्होंने अपने शासन काल में कश्मीर में प्रसिद्ध मार्तन्ड मन्दिर का निर्माण कराया। यह सूर्य मन्दिर मुस्लिम शासकों के द्वारा तोड़े जाने के उपरान्त बचे अवशेष से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कितना भव्य मंदिर था। ८५५ से लेकर ८८३ तक कश्मीर के उपर अवन्तिवर्मन नामक बादशाह ने राज्य किया। इस राजा के समय में नगर को बाढ़ से बचाने के लिए उस समय में उच्चकोटि के इन्जिनियरिंग किये गये। अवन्तिक नामक नगर उसी बादशाह के नाम पर है।

यह राज्य नदियों, झीलों, पर्वतों और बगीचों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस राज्य में अन्य दार्शनिक स्थलों में शालीमार बाग, चश्मेशाही जल प्रपात, अच्छबल और निशातबाग, गुलमर्ग, पहल गाँव, सोनमर्ग, यूसमार्ग, कोकरनाथ, डलझील, बूलरझील और अंचल, अमरनाथ, वैष्णव देवी, मार्तण्ड मंदिर, पन्डेईथान, अवन्तीपुरी, परी महल, शंकराचार्य पहाड़ तथा पटनी टॉप पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है।

.पंजाब

पंजाब ५०३६२ वर्ग किलोमीटर में अवस्थित एक राज्य है जिसकी राजधानी चण्डीगढ़ है। यह प्रदेश भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित सीमान्त राज्य है। इसके उत्तर में जम्मू कश्मीर, उत्तर पूर्व में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण में हरियाणा तथा राज स्थान तथा पश्चिम में पाकिस्तान अवस्थित है।

पंजाब में पर्यटन के विशेष आकर्षक केन्द्र अमृतसर में स्वर्ण मंदिर, जालन्धर का सोदार मंदिर का किला, फतेहपुर सीकरी, दयालबाग, सिकन्दरा, जामा मस्जिद तथा इतमादउद्दौला का मकबरा आदि प्रमुख है।

अयोध्या– फैजाबाद जिले में सरयु नदी किनारे स्थित यह भगवान श्री रामचन्द्र का गृह नगर के रूप में प्रसिद्ध है। यहां पर अनेक मंदिर एवं सरोवर है।

काशी (वाराणसी)– तीनों लोकों से न्यारी काशी यह गंगा तट पर स्थित भारतीय नगरों में वह प्रथम नगर है जिसको भारत का पारम्परिक नगर होने का उच्चाधिकार प्राप्त है तथा यहाँ कला, साहित्य, संगीत एवं संस्कृति को सम्पूर्ण संरक्षण प्रदान करने के कारण इसें भारत की सांस्कृतिक राजधानी के नाम से जाना जाता है। काशी का शाब्दिक अर्थ श्प्रकाश का शहर होता है। तथा यह बनारस एवं वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। यह नगर प्राचीन भारत के सात पवित्र नगरों में से एक है। यह भूतभावन भगवान शंकर की आस्था लिए हुए हिन्दू सभ्यता का एक प्रतीक न केवल भारत के लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए है। यह शहर घाटों, अखाड़ों, मंदिरों तथा गलियों के लिए विख्यात है।

मथुरा– यमुना नदी किनारे अवस्थित एक पवित्र नगर है। यहां पर ही भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली है जिसके कारण यह काफी विख्यात है। यहां पर स्थित अनेक मन्दिर इस नगरी को शोभायमान करते है तथा द्वारिकाधीश मन्दिर की शोभा अतुलनीय है।

वृदांवन– यह चार हजार मन्दिरों, घाटों व सरोवरों से युक्त विख्यात वैष्णव तीर्थ है।

हस्तिनापुर– महाभारत काल में पांडवों की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध यह नगर सम्प्रति जैनियों का विख्यातं तीर्थ स्थल होने के साथ जैन आश्रम भी है।

मेरठ (सरघना)– यह कैथोलिक ईसाइयों के लिए महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल क्योंकि यहां माता मरियम की चमत्कारी तस्वीर से लोग मुरादें पूरी करवाने दूर–दूर से आते हैं।

इलाहाबाद– यहां गंगा, यमुना तथा पौराणिक सरस्वती (अब अदृश्य का संगम है जहां पर हर बारहवें वर्ष विश्व प्रसिद्ध महाकुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है जिसका पौराणिक नाम श्प्रयाग तीर्थराज है। अकबर ने इसका नामकरण कर इलाहाबाद किया था। इलाहाबाद में पातालपुरी मन्दिर (अकबर के किले में) पर्यटन का प्राचीन क्षेत्र है एवं इसके अतिरिक्त माघ मेला, कुम्भ मेला, खुसरों के मकबरे, अकबर के किले, आनन्द भवन, अल्फेड पार्क तथा अनेक मंदिर आदि दर्शनीय स्थल है।

peer reviewed

चित्रकूट– यह स्थान रामकथा तथा विध्न पर्वत शृंखला से जुड़ा हुआ है। यहां स्थित कामतानाथ पर्वत के रंग–बिरंगे पाषाण अत्यधिक आकर्षित करते है। यहां के सात प्रमुख पर्यटकों को अधिक आकर्षित करते है। जैसे– कोटतीर्थ, दीवानगंज, हनुमान धारा, फटिक शाला अनुसया, गुप्त गोदावरी आदि।

सारनाथ– विश्व प्रसिद्ध काशी की गोद में स्थित सारनाथ प्राचीन बौद्ध स्तूप के लिए विख्यात यह एक ऐसा तीर्थ स्थल है जहां ज्ञान, आस्था, भक्ति एवं सुन्दरता सभी एक साथ समाहित है। महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश (धर्मचक प्रवर्तन) यहीं दिया था। भगवान शिव व माता पार्वती के आगमन का सुनिश्चित विश्वास देने वाला सारंग देव मंदिर यहां होना भी कम कौतुहल का विषय नहीं है।

श्रावस्ती– यहां पर भगवान बुद्ध कुछ समय के लिए रहे थे तथा यहां पर जैनियों के आश्रम होने के कारण यह बौद्ध एवं जैन धर्मानुयायियों का पसंदीदा तीर्थ स्थल है।

कुशी नगर– यह देवरिया जिले में अवस्थित है। विश्व में बौद्ध केन्द्र में सबसे पवित्र स्थान है। इसको स्वयं भगवान गौतम बुद्ध ने अपने महापरिनिर्वाण हेतु चुना था। यहां केवल निर्वाण नवनिर्मित है जिसमें भगवान बुद्ध की निर्वाण मूर्ति लेटी हुई स्थापित है।

फर्रुखाबाद (कम्पिल)– यह गंगा के मुहाने स्थित जैनियों का लोकप्रिय तीर्थ है। यहां पर रामेश्वर नाथ महादेव के मंदिर का एक प्रसिद्ध अवशेष है जो वास्तुकला का सबसे प्राचीन उदाहरण है।श

झांसी– उत्तर प्रदेश में कुछ ही ऐसे शहर है जो चहार दीवारी युक्त है। झांसी भी उनमें से एक है। यहां की दीवार चार किमी० लम्बी है तथा इसमें दस दरवाजे है। जैसे– खण्डेराव, दतिया, उन्नाव, भण्डर, बड़ा गांव, लक्ष्मी सौगोर, ओरहा, सैनियार तथा झीर्णन दरवाजे प्रमुख है। इस शहर से महारानी लक्ष्मी बाई की यादगार जुड़ी हुई है। यहां पर भी असंख्य मंदिर पर्यटकों को आकर्षित करते है।

लखनऊ– लखनऊ उतना ही पुराना है जितना कि लक्ष्मण टीला और उतना ही नया जितना कि इमामबाड़ा। यहां की अपनी एक अनूठी संस्कृति है। सन् १८५७ में लखनऊ आये विलियम एच० रसेल ने यह लिखा है कि, "क्या यह अवध का ही शहर है ? अपने आपको विश्वास दिलाने के लिए मैं अपनी आंखों को रगड़ता हूं। नहीं द्य यह रोम नहीं है, न ही यह एथेन्स है, और न ही कान्स्टेन्टीनोपल ख्–.. द्य कोई भी शहर इसके जैसा सुन्दर आकर्षित करने वाला हो ही नहीं सकता है। जितना ही मैं इसे देखता हूँ इसकी खूबसूरती मुझे और भी सम्मोहित करती जाती है।

यह शहर भवनों, बाग व बगीचों तथा ऐतिहासिक इमारतों की शिल्प अद्वितीय है तथा यहाँ सभी कुछ दर्शनीय एवं आकर्षक है। यहाँ की नजाकत और नफासत न केवल हिन्दुस्तान में अपितु पूरी दुनिया में मशहूर है।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के प्रत्येक शहर में पर्यटक को आकर्षित करने हेतु ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक धरोहरों का अतुलनीय भण्डार है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश २,९७,०८५ वर्ग किलोमीटर तक फैला हुआ एक बड़ा प्रदेश है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में तीसरे स्थान पर है। इस प्रदेश की राजधानी भोपाल है। यह प्रदेश भारत के मध्य में स्थित है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर–पश्चिम में राजस्थान, पूर्व में छत्तीसगढ़, दक्षिण में आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा पश्चिम में गुजरात राज्य स्थित है।

प्रदेश के सभी जिले पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह प्राचीन मन्दिरों, प्राकृतिक स्थलों व ऐतिहासिक स्मारकों की भूमि है। कुछ प्रमुख स्थल अग्रलिखित है– चन्देल राजाओं द्वारा निर्मित खजुराहो का मन्दिर, इन्दौर में काच मन्दिर, ओंकारेश्वर मन्दिर, महेश्वर मन्दिर, उज्जैन का महाकालेश्वर मन्दिर, ग्वालियर का किला, गुजारी महल, मान मन्दिर पैलेस, तेली क मन्दिर, तानसेन की समाधि, माण्डू का अशर्फी महल, बाज बहादुर का महल, धार (राजा भोज की राजधानी), धूपगढ़ (सतपुड़ा की सबसे ऊंची चोटी), भीमबेटका (यहां मानव की प्राचीनतम इतिवृत्ति का अवशेष मिला है), उदयगिरि की गुफायें (ये गुफायें विदिशा जिले में स्थित है। ये चौथी सदी के गुप्त वंश की अदभुत निर्माण कला से सम्बन्धित है।), सांची (विश्व का सबसे बड़ा स्तूप है), भर्तृहरि गुफायें (राजा योगी), भर्तृहरि की याद में ११ सदी में परमार वंश के राजाओं द्वारा निर्मित), बाध की गुफायें (माण्डू में स्थित बाध की गुफायें अजन्ता की गुफाओं के समान कलापूर्ण मित्ती चित्रों से युक्त है। इन्हें बौद्ध चित्र के प्रमाण कहते है।) जोगीमारा की गुफायें (यहां चित्रकला की शुरूआती (ईसा सेतीसरी सदी पूर्व) दौर के चित्र मिलते है।), जबलपुर (धुआधार जलप्रपात और संगमरमर चट्टान, चौंसठ योगिनी का मन्दिर), शिप्रा नदी का रामघाट जहां हर बारह वर्ष बाद कुम्भ का मेला लगता है। इसके अतिरिक्त उदयपुर, भोपाल, शिवपुरी, ओरछा आदि अति महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है।

बिहार

बिहार संस्कृत के विहार शब्द का अपभ्रंश है। विहार का शाब्दिक अर्थ बौद्ध मठ है। इस राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल ६३,६११ वर्ग किलोमीटर है एवं यह देश का सबसे अधिक उपजाऊ भू–भाग है। इस प्रदेश की राजधानी पटना है। इस राज्य के पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश, उत्तर में नेपाल तथा दक्षिण में झारखण्ड राज्य स्थित है।

peer reviewed

पटना–

इसे ध्यर्कवंशीय शासक उदयन द्वारा बसाया गया तथा चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा मौर्य वंश की नींव यहीं पर डाली गयी। इसका प्राचीन नाम पाटलीपुत्र था। इसे पुष्पपुरी या कुसुमपुर के नाम से भी जाना जाता था। यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल है जिसमें प्रमुख रूप से सिक्खों के दसवें गुरू गुरू गोविन्द सिंह का जन्म स्थान तख्त श्री हरमिन्दर साहिब सिक्खों का पवित्र स्थान है। इसके अतिरिक्त गोलघर, पटना संग्रहालय, खुदाबक्श खाँ पुस्तकालय, नेहरू तारा मण्डल आदि प्रमुख है।

गया– भारतीय हिन्दू तीर्थो में गया का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। समूचे भारतवर्ष में हिन्दू तीर्थयात्री अपने मृत स्वजनों का पिण्डदान करने यहां आते हैं क्योंकि हिन्दुओं की अटूट आस्था है कि गया में पिण्डदान करने से आत्मा का स्वर्गारोहण होता है।

बोधगया– यह बौद्ध धर्मावलम्बियों का विशेष तीर्थ स्थल है, क्योंकि यहीं पीपल के वृक्ष के नीचे भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था जिसे बोधिवृक्ष कहते है।

सोनपुर– गंगा किनारे स्थित सोनपुर में विश्व का सबसे बड़ा पशु मेला प्रतिवर्ष लगता है।

सासाराम– यहां शेरशाह सूरी किला तथा मकबरा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

वैशाली– जैन धर्म के महान प्रवर्तक बर्द्धमान महावीर की जन्मस्थली होने के कारण यह जैन सम्प्रदाय का प्रमुख तीर्थस्थल है। इसके अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थलों में अशोक स्तम्भ, राजा विशाल का गढ़, कमलवन, बावनपोखर मंदिर, हरि करोरा मंदिर, बौद्ध स्तूप आदि प्रमुख है।

पावापुरी–यहीं पर जैन धर्मके प्रवर्तक भगवान महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया था।

राजगीर– यह हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्मो का पवित्र स्थल है। यहां के दर्शनीय स्थलों में वेणुवन, करंद सरोवर, सप्तधारा मखदून कुण्ड, गर्म झरने, सप्तपर्णी गुफा, मनियार मठ, जरासंघ का अखाड़ा, बिम्बिसार का कारागार, रत्नगिरि और गृददकूट पर्वत आदि प्रमुख है। इसके महत्व को देखते हुए बिहार सरकार के पर्यटन विभाग ने यहां एक आकाशीय रज्जुपथ (तवचम–ूंल) के संचालन की व्यवस्था की है।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों में नालन्दी विश्व प्रसिद्ध प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय, स्थित है। मुंगेर, भागलपुर, बरौनी, मनेर, बाल्मिकी नगर, मैथन, बैंकटपुर आदि प्रमुख स्थान रखते हैं।

राजस्थान

राजस्थान को राजस्थान या राज्य स्थान के नाम से जाना जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ राजाओं या रजवाड़ों के स्थान से था। क्षेत्रफल के आधार पर यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इसके उत्तर में पंजाब, दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश, दक्षिण पश्चिम में गुजरात, पूर्व में उत्तर प्रदेश तथा उत्तर पूर्व में हरियाणा राज्य है।

इस राज्य के सम्पूर्ण भू–भाग में छोटी–छोटी पहाड़ियों, बालूमय रेगिस्तान और छोटे–छोटे वृक्षों वाले वन तथा कुछ उपजाऊ भू–भाग भी है। अरावली पर्वत शृंखलायें राजस्थान को दो भागों में विभक्त करती है। यह राज्य भारत का सीमान्त प्रदेश है क्योंकि पाकिस्तान की लम्बी सीमायें इस राज्य में लगी हुई है।

राजस्थान के पर्यटन स्थलों में माउन्ट आबू का विशेष महत्व है। राजस्थान सरकार की यह ग्रीष्मकालीन राजधानी है। माउण्ट आबू पर स्थित जैन मन्दिरों की शोभा अद्वितीय है। माउन्ट आबू ऐतिहासिकता की दृष्टि से अति प्राचीन है। हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म का अदभुत संगम यहां पर विद्यमान है। वर्तमान समय में ब्रह्म कुमारियों का ईश्वरीय विश्वविद्यालय यहां पर स्थित है। माउन्ट आबू के पश्चात अजमेर पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त मशहूर है। इस नगर की स्थापना ११वीं शताब्दी में तारागढ़ पर्वत पर चौहान शासक अजय पाल ने की थी। यहां पर तारागढ़ का किला, जो कि ऐतिहासिक घटनाओं को समेटे, आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहां पर अकबर ने भी कुछ निर्माण कार्य कराया था। हेबर नामक पादरी ने भारत का जिब्राल्टर कहा है। यहां पर आनासागर नामक एक मशहूर झील है। शाहजहाँ बादशाह ने भी यहाँ पर निर्माण कार्य कराया था। यहां अजमेर शरीफ धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से विश्व प्रसिद्ध है। ख्वाजा साहब चिश्ती और मुइनुद्दीन चिश्ती की विश्व प्रसिद्ध दरगाह है। अजमेर शरीफ सम्पूर्ण विश्व के मुस्लिम बन्धु मजार पर चादर चढ़ाने आते है। दरगाह की दर्शनीय में उर्स के अवसर पर १२० और ८० मन बिरयानी एक साथ पकायी जाती है। अजमेर से ११ किलोमीटर की दूरी पर पुष्कर नामक महान तीर्थ स्थान है। सम्पूर्ण विश्व में पुष्कर ही एक ऐसा स्थान है जहां पर ब्रह्मा जी का मन्दिर है।

पर्यटकों का आकर्षण भरतपुर, जिसे राजस्थान का प्रवेश द्वार के नाम से भी जाना जाता है, जोकि केवलादेव धाना चिड़ियों के अभ्यारण्य के साथ–साथ वहां स्थित बयाना का किला तथा डीग का दुर्ग आकर्षण का केन्द्र है क्योंकि बयाना के किले को अंग्रेजी की तोपों ने गिराने में कामयाबी नहीं प्राप्त की। इसके अलावा बीकानेर का अवस्थित है। बीकानेर लालगढ़ महल, जैन मठ और मस्जिद तथा शिव मंदिर दर्शनीय है। इसके अतिरिक्त जयपुर नामक नगर, जिसे राजस्थान की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है, इस नगर को गुलाबी नगर के नाम से भी जाना जाता है। इस नगर के चारों ओर पहाड़ियाँ है।

peer reviewed

गुजरात .

गुजरात १,६६,०२४ वर्ग किलोमीटर में भारत के दक्षिण पठार के पश्चिमी तरफ स्थित है। इसके पश्चिम में अरब सागर है जिसका समुद्र तट भारत में सबसे लम्बा समुद्र तट है। इसकी लम्बाई करीब १०७४ किलोमीटर है। उत्तर में पाकिस्तान, उत्तर–पूर्व में राजस्थान, पूर्व में मध्य प्रदेश तथा दक्षिण–पूर्व में महाराष्ट्र अवस्थित है। गुजरात की राजधानी गांधीनगर है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राज्य में अनेक स्थल है जिनमें से प्रमुख रूप से हिन्दू धर्मावलम्बियों में मान्यता प्राप्त भारत के चार धामों में से एक धाम द्वारिका इसी राज्य में अवस्थित है जोकि हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है तथा भारत की पवित्रतम सात महानगरियों में से एक है।

इसके अतिरिक्त सोमनाथ का मन्दिर अत्यन्त विख्यात है। भगवान शिव के ज्योतिर्लिंगों में से सोमनाथ में स्थापित प्रसिद्ध शिवलिंग है जिसे आक्रमणकारी महमूद गजनवी ने क्षतिग्रस्त कर दिया था। इस मन्दिर का जीर्णोद्वार स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने करवाया। इसके अलावा भावनगर, अम्बाजी, भद्रेश्वर, तरंगा, जूनागढ़, शामलाजी, डांडेर, जामनगर आदि मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही जैन मन्दिरों के लिए पालितान का जैन मन्दिर व गिरनार पर्वत बहुत प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। पहाड़ की पांच चोटियों पर पांच जैन मन्दिर है। ये सभी बारहवीं शताब्दी के है। अहमदाबाद गुजरात के प्रमुख शहरों में है जोकि औद्योगिक नगरी है। यहां की जुम्मा मस्जिद विश्व प्रसिद्ध है। जैन और मुस्लिम स्थापत्य के समन्वय से सन् १४२६ में सुल्तान अहमद ने इसका निर्माण कराया था। २६० स्तम्भों पर १५ गुम्बद है जिनका आकार इतना भव्य एवं विराट है जिसके कारण यह समुचे विश्व में प्रसिद्ध है। इसके साथ ही अहमदाबाद की झूलती मिनार या शैकिंग टांवर्स दर्शनीय है। यह सिद्धि की बसीर की मस्जिद के रूप में विख्यात है। १४ ‡ ० में मल्लिक शाहरंग शा ने इसका निर्माण कराया था। अहमदाबाद से ७६ किमी0 दूर लोथर नामक स्थान है जो सिन्धु घाटी की सभ्यता का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी की जन्मभूमि पोरबन्दर, पाटण, सिद्धपुर, घुमली जैसे पुरातत्व और वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है। राज्य ४ राष्ट्रीय पार्क तथा ११ वन्य प्राणी अभयारण्य है, जिसमें गिरवन, एन्जर वन्य, गदर्भ विहार आदि दर्शनीय है।

गोवा यह स्थान पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य कारण है। यहां पश्चिमी (पुर्तगाली) और भारतीय सभ्यताओं का अजीब मिश्रण देखने को मिलता है जिससे यहां सर्वाधिक पर्यटक आते है। साथ ही यहां सागर तट लगभग सौ किमी० का है जहां चांदी से श्वेत रेत का सौन्दर्य विश्व में प्रसिद्ध है जिसके कारण गोवा का तट विश्व के सर्वाधिक मनोरम तटों में गिना जाता है, जिनमें से कुछ तटों का उल्लेख अग्रलिखित है कोलवा तट– मारगाज्यों से लगभग ६ किमी० की दूरी पर यह तट है। इस तट के दृश्य अत्यधिक आकर्षित करने वाले है। कालनगुट (कैंलगुटे) तट– यह १६ किमी० लम्बा तट है। यह तट गोवा के तटों की रानी कहा जाता है जहां अवकाश के दिनों में विश्राम के लिए

पर्यटक आते हैं क्योंकि यहां अच्छे विश्राम स्थल है। (३) डोना–पोला– यहां के दृश्य लिखित से प्रतीत होते है। यहां से जौरी एस्टुअरी एवं मारमोगा बंदरगाह बड़े रमणीक दिखायी देते है।

भारत में पर्यटन उद्योग का आर्थिक क्षेत्र में योगदान

भारत के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसका देश की अर्थ–व्यवस्था के विभिन्न अंगों से गहरा सम्बन्ध है। इससे जहां एक ओर राजस्व की प्राप्ति होती है, वहीं दूसरी ओर इससे देश के बेरोजगार युवकों को रोजगार के अवसर

peer reviewed

उपलब्ध होते हैं। विदेशी मुद्रा के दृष्टिकोण से इस उद्योग का और भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में पर्यटन न केवल बिना किसी वस्तु के निर्यात के करोड़ों रूपये की विदेशी मुद्रा का संचय करा देता है, बल्कि हमारी संस्कृति के प्रचार को भी, विदेशों में बिना किसी अतिरिक्त श्रम के पहुंचा देता है।

पर्यटन राष्ट्रीय आय को बढ़ावा देता है। पर्यटन द्वारा विदेशी व सार्वजनिक कोष का बोझ हल्का हो जात है। अधिकांश राष्ट्रों में पर्यटन एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में स्थापित है जिसमें लोग बड़ी संख्या में आवास, खान–पान, परिवहन मनोरंजन, सेवा उद्योग व स्मारिका व्यापार में तल्लीन है। पर्यटन एक श्रमिक कृत उद्योग है और अन्य साधारण उत्पादक उद्योग की तुलना में कई गुना अधिक रोजगार प्रदान करता है, अर्थात यह बेरोजगारी समाप्त करने का बहुत ही बड़ा पहलू है। जिन क्षेत्रों में श्रमिकों का बाहुल्य है वहाँ बेरोजगारी है, उनके लिए पर्यटन एक समाधान है क्योंकि पूँजी नियोजन की दृष्टि से श्रमिक शक्ति के प्रयोग का प्रतिशत अधिक है। पर्यटन एक रोजगारित उद्योग है, पर्यटकों की सेवाओं की पूर्ति रोजगार के अवसर बढ़ाते है। पर्यटन उद्योग के बाहर भी रोजगार के अवसर प्रदान करने का श्रेय पर्यटन को ही है। पर्यटन द्वारा सृजन किये गये रोजगारों की सीमा कार्यो से लेकर प्रबन्ध कार्यो तक फैली हुई है। यह उद्योग अन्य उद्योगों की अपेक्षा लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। पर्यटन के फलस्वरूप होटल उद्यमियों, पर्यटन स्थलों के कार्मिकों, परिवहन व हस्तकारित उद्योगों के मार्गदर्शक आदि के रूप में प्रत्यक्ष कार्यो का उदगम होता है। पर्यटन ही एक ऐसा निर्यात व्यापार है जो राष्ट्रीय स्रोतों का हास किये बिना एक बहुत बड़ी विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। अतः पर्यटन एक निर्यात व्यापार के रूप में अन्य उद्योगों की अपेक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा स्वयं अद्वितीय स्थान स्थापित किये हुये है।

peer reviewed

पर्यटन एक अदृश्य निर्यात है। वाणिज्य की दृष्टि से यह व्यापार व उद्योगों से भिन्न है। पर्यटन में न तो किसी माल को जहाज द्वारा विश्व भर में भेजा जाता है और न ही किसी किस्म के भाड़े व कर का भुगतान करना पड़ता है। इसका बाजार स्वदेश में ही होता है। पर्यटन उद्योग अर्थ–व्यवस्था का एक हिस्सा है जो कि पर्यटकों की इच्छाओं की पूर्ति करता है तथा उन कम्पनियों एवं संस्थाओं को भी इसमें शामिल किया जाता है, जिनका सामान्य उद्देश्य पर्यटकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है।

पर्यटन से न केवल परिवहन के साधनों को प्रोत्साहन मिलता है अपितु विभिन्न औद्योगिक शाखाओं को तथा फलोत्पादन, कृषि, क्राफ्ट, होटल, सड़क, मनोरंजनात्मक साधनों, दिग्दर्शकों, (गाइड) तथा यात्रा अभिकर्ताओं एवं अन्य उपयोगी सेवाओं को भी प्रोत्साहन मिलता है। पर्यटन क्रियायें पर्यटन आय के दृष्टिकोण से भी काफी महत्वपूर्ण है। पर्यटक द्वारा आरामदायक वस्तुओं पर किया गया व्यय, फुटकर विक्रेताओं, निर्माताओं एवं भोजनालयों तथा परिवहन सहित अन्य व्यावसायिक वर्गों के लिए आय का सृजन करता है। पर्यटन से विभिन्न पुराने शहरों के भाग्य भी परिवर्तित हुए है तथा यह विभिन्न उद्योगों को उत्साहित भी करता है। पर्यटन से स्वदेशी उद्योगों के लिए नये–नये बाजारों का सृजन होता है तथा पर्यटन समस्त सुविधाओं के लिए उच्च स्तरीय रहन–सहन का स्तर कायम रखता है। पर्यटन उद्योग से दीर्घकालीन लाभ प्राप्त होते है तथा यह आय के वितरण में भी सहायक होता है।

इसमें कोई शक नहीं है कि पर्यटकों को परिवहन के साधन अथवा आवास उपलब्ध कराने या उनकी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार के औद्योगिक उत्पादों का सदुपयोग किया जाता है। परन्तु इन सब के बावजूद पर्यटन स्पष्टतया एक मानवीय क्रिया–कलाप ही है जो सेवा के क्षेत्र से सम्बद्ध है और यह किसी भी देश के आर्थिक विकास में उद्योग अथवा कृषि के क्षेत्रों से बढ़कर योगदान दे सकता है। पर्यटन उद्योग आज न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व मैं अग्रणी बन चुका है तथा विदेशी मुद्रा अर्जित करने के दृष्टि से पर्यटन उद्योग हमारे देश में अपना प्रथम स्थान रखता है। अतः

वर्तमान समय में पर्यटन बिना धुएँ व चिमनी के उद्योग का रूप धारण कर लिया है जिससे इसका महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

उपसंहार

भारत में पर्यटन उद्योग तीव्र गति से प्रगति कर रहा है क्योंकि यह अन्य क्षेत्रों की तुलना में निवेश की प्रति इकाई पर अधिकतम रोजगार उत्पन्न कर रहा है तथा सबसे अधिक विदेशी मुद्रा भी इसी उद्योग से प्राप्त हो रहा है। एवं आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया ने भी विदेशी पर्यटकों में भारत भ्रमण के प्रति रूचि बढ़ाई है। ज्ञानवर्धक तथा भावनात्मक एकता के लिए पर्यटन का प्राचीन काल से ही एक विशिष्ट स्थान रहा है। लोगों के रहन–सहन, तौर–तरीके, उनकी संस्कृति, भाव, खान पान का परोक्ष रूप से ज्ञान प्राप्ति केवल पर्यटन द्वारा ही सुलभ हो सकता है। वर्तमान समय में परिवहन एवं संचार माध्यमों की व्यापकता के फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व के लोग एक–दूसरे के अति समीप आ गए हैं और इनकी सहायता से पर्यटन इतना अधिक विकसित हो गया है कि अब यह एक महत्वपूर्ण उद्योग का दर्जा प्राप्त कर लिया है। इसकी सहायता से जहां एक तरफ सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों में व्यापकता आयी हैं, वहीं दूसरी ओर इससे बिना कुछ खोए ही विदेशी मुद्रा के साथ ही लाखों लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार पर्यटन भारत का ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व का एक बड़ा ही प्रभावशाली उद्योग है । और अब यह बिना धुएं व चिमनी के उद्योग का रूप धारण कर लिया है। भारत में विदेशी मुद्रा के अर्जन की दृष्टि से पर्यटन प्रथम स्थान पर विद्यमान भारत में इतना सब कुछ विद्यमान होने के बावजूद भी पर्यटन उद्योग को हम उन ऊंचाइयों पर नहीं पहुंचा सकें हैं जहां तक पहुंचने की क्षमता हमारे देश के अन्दर मौजूद है। इसकी कुछ प्रमुख बाधाएं है जिसे दूर करके ही भारत पर्यटन के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर सकता है। अतः भारत में पर्यटन को पूर्ण विकास के लिए अपने आधारभूत ढांचे में परिवर्तन करना चाहिए तथा एक, दो, तीन, चार सितारा श्रेणी स्तर के होटलों में बढ़ोत्तरी करनी चाहिए तथा विभिन्न होटलों और ट्रांसपोर्टशन का पूर्ण रूप पर्यटन के केन्द्रों पर आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराना चाहिए।

peer reviewed

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] वाशम, ए० एल० हिस्ट्री ऑफ टूरिज्म द वन्डर दैट वाँज इण्डिया द वन्डर दैट वाँज इण्डिया (द्वितीय)

[2] रिजवी, एस० ए० ए० टूरिज्म एण्ड होटल इंडस्ट्री इन इण्डिया, ए स्टडी इन मैनेजमेन्ट इण्डियन टूरिज्म–

[3] डॉ० सहाय, शिव स्वरूप आरपेक्ट्स ऑफ ए ग्रेट एडवेंचर टीचिंग टूरिज्म टेवेल एजेन्ट्स एण्ड टूरिज्म टूरिज्म पर्यटकों का देश भारत

[4] आनन्द, एम० एम० ब्लोसिंग आर ब्लाइट टूरिज्म प्रिंसिपुल्स, फिलॉसफी टूरिज्म दी गुड

[5] सिंह, कर्ण दी बैड एण्ड दी अग्ली दी टूरिस्ट मूवमेन्ट, इन इफोनामिक स्टडी दूरिज्म,

[6] लौसन, मैलकम इकोनाभिक, फिजिकल एण्ड सोशल इम्पेक्ट कास्ट बेनेफिट

[7] मौसिन, जेम्स डब्ल्यू स्टडी ऑफ टूरिज्म पर्सपेक्टिव ऑन इण्डियन टूरिज्म इन इण्डिया, १९८१ टूरिज्म पास्ट, प्रजेन्ट एण्ड फ्यूचर

[8] यंग, जॉर्ज दी इकोनामिक एण्ड सोशल इम्पैक्ट ऑन डेवलपिंग व्यूटीन एण्ड इण्टरनेशनल टूरिज्म टूरिज्म डेवलपमेन्ट प्रिंसिपल एण्ड प्रैक्टिसेज

[9] मैक्इन्थोस, आर० डल्ल्यौ इकोनामिक डेवलपमेन्ट टूरिज्म मैनेजमेन्ट टूरिज्म मार्केटिंग आधुनिक परिवहन

[10] ,रोजोनो एण्ड एल्सिफर हिन्दी ग्रन्थ एकादमी, लखनऊ, १९८० टूरिज्म एण्ड होटलियरिंग

[11] ओगालिये, एफ० डब्ल्यू १३– मैथीसन एण्ड जाफरेवाल

[12] हिव, एस० एन० ,, ए वर्ल्ड वाइड इण्डस्ट्री टूरिज्म एण्ड डेवलपमेन्ट इन इण्डिया टूरिज्म इन इण्डिया, हिस्टरी एण्ड डेवलपमेन्ट

[13] १५– बरकत, ए० जे० एण्ड मेडिलिक, एस० टूरिस्ट इण्डस्ट्री इन इण्डियास टूरिज्म एण्ड डेवलपमेन्ट सोर्स ऑफ द गंगा इन माउन्टेन रीवर्स ऑफ

peer reviewed